

उपग्रह नरिमाण हेतु इसरो का नजिी क्षेत्र के साथ अनुबंध

सनदरभ

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (Indian Space Research Organisation-ISRO) ने उपग्रह नरिमाण का काम आउटसोर्स करके नजिी क्षेत्र के साथ हाथ मलिया है। इसरो ने उपग्रह नरिमाण की गतिके साथ सामंजस्य बैठाने और इस दशिया में आने वाली समस्याओं को दूर करने के लयि नजिी क्षेत्र के साथ अनुबंध कयिया है।

परमुख बदि

- लगभग 150 मशिन और तीन दशकों के अंतरिक्षीय कार्य के बाद, इसरो का यह एक अभूतपूर्व अभयान है।
- इसके लयि बेंगलुरु के एक हाईटेक रक्षा उपकरण आपूर्तकिरता अल्फा डजिाइन टेक्नोलॉजीज़ (Alpha Design Technologies) को पहले नजिी उद्योग के तौर पर चुना गया है।
- भारत को उसका पहला बड़ा नजिी उपग्रह दलाने के लयि इसरो ने 400 करोड़ रूपए की कंपनी अल्फा डजिाइन टेक्नोलॉजीज़ के साथ यह करार कयिया है।
- इस अभयान में नजिी क्षेत्र के दल, सरकारी इंजीनयिरों के साथ मलिकर पूरण नेवगिशन उपग्रह बनाने का काम कर रहे हैं। जसिके अंतरात 70 इंजीनयिरों का दल आगामी छह महीने में उड़ान भरने योग्य उपग्रह बनाने के लयि कार्यरत है।
- यह बलिकूल नई कसिम की जुगलबंदी है क्योकयिह पहला अवसर है, जब भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने, कई करोड़ रुपए के उपग्रह को बनाने के लयि नजिी क्षेत्र के कसिी उद्योग की मदद ली है।
- गौरतलब है कि उपग्रह को जोड़ने और उसके परीक्षण करने का काम अपने हाथ में लेना कसिी भी भारतीय कंपनी के लयि चुनौतीपूर्ण काम है।
- अल्फा डजिाइन टेक्नोलॉजीज़, बेंगलुरु के नेतृत्व वाले एक संघ (Consortium) को भारत के नेवगिशन तंत्र के लयि दो पूरण उपग्रह बनाने का काम दयिया गया है।
- भारत को ई.वी.एम. (Electronic Voting Machines) की पहली खेप दलाने में मदद करने वाले करनल एच.एस.शंकर इस संघ के नेतृत्वकर्ता हैं। उल्लेखनीय है कि एच.एस.शंकर अल्फा डजिाइन टेक्नोलॉजीज़ के अध्यक्ष और परबंध नदिशक हैं।

पृष्ठभूमि

- धयातव्य है कि वर्तमान में अंतरिक्ष की कक्षा में सात उपग्रहों की मौजूदगी के साथ नावकि (Navigation with Indian Constellation), स्वदेशी जी.पी.एस. प्रणाली सक्रयि है लेकनि कसिी आकसमकि स्थिति के लयि इसरो को जमीन पर दो अतरिकित उपग्रह चाहिए जनिहें कसिी प्रकार की गड़बड़ी की स्थिति में वकिलप के तौर पर क्षेपति कयिया जा सके।
- इसके अतरिकित, हाल ही में इसरो द्वारा एक साथ 104 उपग्रह प्रक्षेपति करने की उपलब्धिने, वैश्वकि स्तर पर भारत को एक वशि्वसनीय 'अंतरिक्ष शक्ति सिंपन्न राष्ट्र' के रूप में स्थापति कर दयिया है।
- इसरो हमेशा से ही एक ऐसी व्यवस्था बनाना चाहता है जहाँ नई उपलब्धियाँ हासलि कर भारत भवषिय में आगे बढ़े और उसके लक्ष्य पूरे हो सकें। वर्तमान में अंतरिक्ष क्षेत्र में जतिना कार्य कयिया जा चुका है, आवश्यकता उससे भी अधिक की है।
- धयातव्य है कि इसरो प्रतविर्ष 16 से 17 उपग्रह बनाने हेतु प्रतबिद्ध है जो कि एक मुश्कलि लक्ष्य है।
- वदिति हो कि उपग्रह नरिमाण में सैकड़ों करोड़ रूपए की लागत आती है एवं इस कार्य में अत्यधिक सटीकता की जरूरत होती है।
- प्रक्षेपण के बाद यह उपग्रह लगभग 10 वर्ष के लयि सक्रयि रहते हैं और इनकी मरमत्त की कोई संभावना नहीं होती। अतः मांग और आपूर्ति में अंतराल बना रहता है।
- फलिहाल लक्ष्य और उसकी प्राप्ति के मध्य बना हुआ यह अंतर 'जरूरत और क्षमता' का है।
- इसरो का मानना है कि नजिी क्षेत्र की मदद से इस अंतर को पाटना तथा उपग्रह नरिमाण की अपेक्षति गतिके साथ तालमेल बैठा पाना संभव है।